अतीत की ओर...

वर्ष : 01, अंक : 03, जून – जुलाई 2023

प्रमिला

माँ से मातृभाषा तक...

सारे रस्ते इक मंज़िल तक जात हैं,
लेकिन हर रस्ते का है उनवान अलग...
- प्रखर "पुंज"

मूल्य : 20 रुपए | पृष्ठ : 4

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

माटी जोहत आपन सेवक के राह... ?

संपादक की कलम से...

"खेती कइला से आज के समय में का मिली, खेती में कुछ रखल बा का...?" ई सब बतकही सुनला के बाद घर के उ बुजुर्ग लोग के बात आ काम याद आवेला। उ मेहनत याद आवेला...

ए गो उ दिन याद आवेला जब सबेरे सबेरे नींद खाली ई बात से खुल जाओ की आज बाबा (नया लोग दादा जी कहेला) के साथे खेत में जाएकेबा। एगो उ दिन याद आवेला जब बाबा के साथ खेत में आलू के रोपनी करे खातिर मन में अल्गे उत्साह रहत रहे। एगो उ दिन याद आवेला जब खेत में बैल आ हल के सवारी जइसन कौनो सवारी में मज़ा ना आवे। बाबा के साथे पीछे पीछे एक हाथ में छईटी लेके पूरा खेत में घूमे वाला आनंद अबहु जब याद आवेला तब आंख से लोर आपन रास्ता खोज लेवे ला।

खेत में आलू के बिया रोपे के बेरा बाबा के उ आवाज़ आजो कान में गूँजेला... "ठीक से बिया लगइह... उल्टा मत रखिह... ना त ना जामी...। खेती, किसानी, रोपनी, कटनी... अइसन जाने कई गो शब्दन के याद बचपन के किताब में आजो बंद बाटे।

मेड़ के रास्ते खेत में दउर के जाए वाला जोश, बिना चप्पल खाली पैर खेत मे रेस लगावे वाला जोश, खेतमें कौनो गाछ के छांव में सतुआ खाए के स्वाद, ग्लास वाला परम्परा से कही दूर... अंजुरी में पानी पिए के स्वाद... न जाने सैकड़ों याद के संजोए वाला खेत के माटी आज आपन सेवक के राह जोह रहल बा।

खेती से दूर भागत नयका पीढ़ी... उ मेहनत से अछूता बा जौन घर में अनाज आवेके कारण बा, उ पसीना से अछूता बा... जौन बड़ा बुजुर्ग लोग आपन पसीना से खेत के सिचले बा, उ माटी के सुगंध से अछूता बा... जेकर खुशबू कौनो फूल से ना आई।

to be continued...

नज़्म – अक्सर ख़्वाब देखता हूं मैं...

- अनीश कुमार देव

अक्सर ख़्वाब देखता हूं मैं
मुझ को पसन्द है ख़्वाब देखना
एक ख़्वाब ही तों है जिस में तुमसे मिल पाता हूं
कह पता हूं अपनी दिल की बातें

यू तो चोरी चुपके से हर रोज देखता हूं तुम्हें
मिन्नतों में खुदा से हर रोज़ मांगता हूं तुम्हें
कई दफा कोशिश की तुम्हे देने को गुलाब,
वो गुलाब किताब के पन्नों में अब भी सुखा पड़ा है
हां मगर उसकी खुशबु अब भी तारो ताजा है।

कई खत लिखें तुम्हारे लिए
वो खत अब भी पड़े मिलेंगे मेरे तकिए के नीचे

हर रोज ख़्वाब देखता हूं
ख्वाबो में हर रोज मिलता हूं तुमसे,
उन खातों में गुलाब रख देता हूं तुमको
पढ़ती हो तुम पलके झुका कर
मैं सहमा सा देखता हुं तुम्हे तुमसे नजर बचा कर

तुम खत का पन्ना मोड़ लिपट जाती हो मेरे बाहों में आकार
सुना है तुमको पसन्द है तितलियां बहुत
सो मैने अपने आंगन में कई फूल लगाए रग – बिरंगे
सुना है तुमको पसन्द है मोर पंख बहुत
सो मैने पाले है कई मोर अपने बागों में

हा मुझे बस ख़्वाब पसन्द है
क्योंकि जो तुम मिलती हो मुझ से ख्वाबों में,
मैं तुम और मेरा छोटा सा आंगन
वो रंग बिरंगे खिले फूलों पे तितलियां
झपकती है पंखे जैसे तुम्हारी आखों की पापनियाँ

बाग, वो मोर, तालाब, तालाब किनारे बैठे हम तुम
देखते है ढलती हुई शामों को, उन चमकती हुई
चांदनी रातों को,
एक टक देखती हो तुम टिमटिमाती हुए तारो को
और मैं पागल सा देखता रहता हूं तुमको,
वो प्यारी सी सूरत जिसके माथे पे लगी
रहती है बिंदी एक काली सी,
जो चमकता चांद से भी
खूबसूरत चांदनी उजालों से

टिमटिमाती आखें तुम्हारी, तारों के जैसे
मचलते पलके तेरी बादलों के जैसे,
और उन्हें देखते देखते मैं खो जाता हूं गहरी रातों में

फिर जब होती है भोर
देखती हो छत से तुम मोर
फूलों पे बैठे तितलियों के साथ
नाचती मोरनी के जैसे झूमती हो

बागों में किसी कोने में बैठा
तुम्हे मुस्कुराता देख चहकता हूं मैं
हा अक्सर ख़्वाब देखता हूं मैं

- सन्नी की कलम से...

हर हार में हार नहीं, कुछ हार में जीत है,
हर रार में रार नहीं,कुछ रार में प्रीत है ।।

- सनी सिन्हा

रिश्ता भरोसे का था, तुम तो निगरानी कर बैठे,
कहूँ तो ईमानदारी से ही तुम बेईमानी कर बैठे ।।

- सनी सिन्हा

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में...

1978 : फीफा विश्व कप अर्जेंटीना में शुरू हुआ।

1908 : कलकत्ता शेयर बाज़ार की शुरुआत।

तालाब रुको! हमारे साथ ही रहो...

रितेश आदर्श

हाल ही में मुझे गांव जाने का मौका मिला। गांव में घर से थोड़ी दूर पर मैं और मेरे साथी क्रिकेट खेलते हैं। क्रिकेट में बाएं हाथ के बल्लेबाजों को गांव तरफ अक्सर दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। बाएं तरफ बाउंड्री लाइन के पास तालाब होने की वजह से अक्सर गेंद गुम करने और खरीदने का जिम्मा मेरे कंधों पर ही आता रहा। बचपन में मेरी वजह से ना जाने कितनी गेंद उस तालाब में समा गई। अक्सर गुस्से में मैं कहता था, "यह कमबख्त तालाब सूखता क्यों नहीं!" ना जाने कितनी ही गेंद जो मैंने कई झूठे बहाने बना-बना खरीदी थी, उन्हें निराश नजरों से तालाब में समाते हुए देखकर मैं बड़ा हुआ।

कई साल बाद गांव लौटने पर मेरे साथियों ने फिर से क्रिकेट का आयोजन किया। क्रिकेट खेलने के दौरान इस बार गेंद गुम होने का खतरा एकदम नहीं था। वह तालाब जो कभी हाथी डूबने जितना गहरा था, उसमे अब टहलना भी आसान था। भीषण गर्मी, अनियमित मॉनसून से इस बार हालत और ज्यादा खराब हो चुके थे।

Photo Credit : Gaao Connection

इस बार मैंने उस कमबख्त तालाब को सूखा पाया। किसी बूढ़े वृक्ष की तरह वह बेदम हो चुका था। तालाब महज पानी का भंडार नहीं, जीवन का आधार भी है। मैं जानता हूं, इस तालाब की लाश को गिद्ध की तरह मानव सभ्यता नोच खाएगी। एक दिन भविष्य में यह तालाब सड़क और नाला दोनों का रूप धरेगा। अपने नए जन्म में इसे भी पटना के बोरिंग कैनाल रोड की तर्ज पर एक नए फैंसी नाम से नवाजा जाएगा।

Photo Credit : Gaao Connection

यह ज़ोंबी (पिशाच) की तरह नदियों को चबा जाएगा। तालाब के काले पानी का विकराल यमरूप तटस्थ नदियों के अपराधों का हिसाब करेगा। यकीन मानिए तालाब का मर जाना नदियों के मरने की पूर्वसूचना है। पढ़ी लिखी नस्लें ऐसी मौतों को क्लाइमेट चेंज या ग्लोबल वार्मिंग मानती हैं। अपनी नदियों और तालाब को बचा लीजिए कहीं बहुत देर हो गई तो मानव जीवन का आधार, 'जल,जीवन और हरियाली' तीनों नष्ट हो जाएंगे।

भोजपुरी विशेष : (ग़ज़ल)

कतना बात लिखी कागद पऽ कतना कह के बताईं
अब मिल के दिल के बात सब दिल से दिलवे सुनाई

कतना जतन से रखनी हम , उनकर दिहलका फूल
किताब के बीच के पाना , एह बात के देबेला गवाही

जब जब उनकर सुरत झलकल मोरा आँखी के सोझा
उनका याद मे गजल कहली , अब कइसे परेम जताई

भोर दुपहरिया भा सांझ रात मन एही सोच में डूबल
कब होई नेह के बरखा , कब प्रित के फूल फूलाई

एबदरा अब तूहूँ सुनऽ लऽ , हमार परेम कहानी हो
तोहरो आँखी मे भर जाई पानी तूहूँ देबऽ बूनी बरसाई

- सोनू किशोर

रेखाचित्र : भाग 2

आर्टिस्ट का नाम :
रश्मि तिवारी (न्यू हाउसिंग कॉलोनी, छपरा)

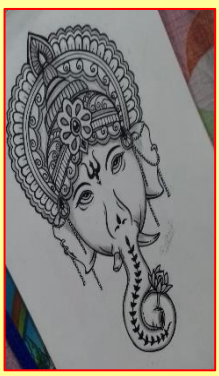

आर्टिस्ट का नाम :
प्रकाश कुमार (छोटा तेलपा, छपरा)

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में...

1792 : केंटकी संयुक्त राज्य अमेरिका का 15 वां राज्य बन गया।

1929 : कम्युनिस्ट दलों का पहला सम्मेलन अमेरिका के ब्यूनस आयर्स शहर में आयोजित किया गया।

कैमरा में कैद 'प्रकृति' और 'जीवन'

जगदम कॉलेज पोखरा

फोटो साभार :
शिवम कुमार (हेमनगर, छपरा)

आप भी भेजें अपनी फोटो, हमारा पता है :
rachnakosh.editor@gmail.com

डोरीगंज घाट

पक्षियों की चहचहाहट

प्रकृति मे घुलती रंगें

हनुमान मंदिर, छपरा

भोजपुरी विशेष

ऐसे न बन रहा है तो वैसे बना के देख।
पूरे बदन को छोड़ तू चेहरे बना के देख।

इनको नहीं मिलती है खिलौनों से वो ख़ुशी
ये गांव के बच्चे हैं सो कंचे बना के देख।।

- प्रखर "पुँज"

अब नहीं होती है हर इक बात पे हैरत मुझे।
मिलती है नाकामियों से और भी हिम्मत मुझे।

किस लिए मैं कर रहा था यार मेहनत अब तलक
ज़िंदगी जब दे न पाई थोड़ी सी मोहलत मुझे।

- प्रखर "पुँज"

हुस्न की निगाहें नुकीली हो जाएं तो,
जवानी के साईकल का पंचर होना लाज़मी है...

- अलबेला

हमें हवा से बैर है, तेरी याद दिलाता है,
छूता है जब मुझको, छुअन तेरी मेहसूस कराता है।

- प्रेम शंकर

ए बदरा पानी द ए बदरा पानी द...

ए बदरा पानी द ए बदरा पानी द
तलफत बा धरती अब नई जिनगानी द।
ए बदरा पानी द ए बदरा पानी द....

नाहक न गरज न करऽ मनमानी
गरमी से ब्याकुल बा सगरो परानी।
बरसऽ झमाझम पुरुआ सुहानी द।

ए बदरा पानी द ए बदरा पानी द...
तलफत बा धरती अब नई जिनगानी द...

चहबऽ त चहकी सब खेती – किसानी
चिरई - चुरुंग के लें मिली दाना - पानी।
मउराइल फसलन में फेरि से जवानी द।

ए बदरा पानी द ए बदरा पानी द
तलफत बा धरती अब नई जिनगानी द....

दरकता जेठे में खेतवा के छातीजारता सूरज
सरेहिया के थाती।पीर हरऽ धरती के चुनर तू धानी द।

ए बदरा पानी द ए बदरा पानी द
तलफत बा धरती अब नई जिनगानी द...

संसरी टंगाइल बा सबके आकासे
चातक के जइसे मरे सब पियासे।
छिछली - गड़हिया में 'गुंजन' रवानी द।

ए बदरा पानी द ए बदरा पानी द
तलफत बा धरती अब नई जिनगानी द.....

- डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'

साहित्य मासिक

घनश्याम

श्याम से सावन तक...

वर्ष : 01, अंक : 03 , जून – जुलाई 2023

इस जहां से जुदा कर के फ़क़त तन्हा कर दे।
मैं बुरा हो गया हूँ तो मुझे अच्छा कर दे।

- प्रखर "पुंज"

मूल्य : 20 रुपए

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

"आगे जहाँ और भी है"

एक हार ज़िन्दगी का अन्त नहीं होता,
आगे जहाँ और भी है।
मत राह में रूक ओ राही, राहे और भी है।
उतर ही गया जब तु, मैदान-ए-जिन्दगी के जंग में
निशाना तो लगा, तरकश मे तीर और भी है।
एक हार ज़िन्दगी का अन्त नहीं होता
आगे जहाँ और भी है।
चिर दे तु सिन्धु के लहरों को
पतवार तो उठा, किनारे और भी है।

एक हार ज़िन्दगी का अन्त नहीं होता,
आगे जहाँ और भी है।
रुख मोड़ ले घबराता क्यों है ओ राही
दिशाएं और भी है।
एक हार ज़िन्दगी का अन्त नहीं होता,आगे जहाँ और भी है।हाँ आगे जहाँ और भी है।

- रानी

शाम - ए – इतवार

अज़ब शाम है इतवार की,
कातिलाना, काकिराना,
बेहतरीन, नाज़नीन,
आ गयी घड़ी इज़हार की
अज़ब शाम है इतवार की।

पडटो में पड़दानशी,
घड़ों में कैद हुई दीवानगी,
नफ़रतों में पलते हुए
अज़ब शाम है इतवार की।

चाहरदीवारी के बाहर,
बच्चों की चौघड़िया
अनाथ सड़क पर घूमते,
अज़ब शाम है इतवार की।

नौलखा कोई हार पहनता
कोई गड़िया को तरसता
कोई झोले भर फुलझड़ियां खरीदता
कोई फटे पजामे देख कसकता,
अज़ब शाम है इतवार की

सारे काफिर वहीं मिलेंगे,
वो ठेका है दरबार की
आ गई घड़ी इज़हार की
अज़ब शाम है इतवार की...

- प्रेम शंकर

एक सवाल...

एक सवाल मेरे दिल से निकला
मेरे दिमाग को चुभता है...
की हार जीत तो जीवन का खेल है
इससे किस्मत का क्या काम
हम उस भगवान को क्यों श्रेय या दोष दें ?
जबकि ये था मेरे मेहनत का परिणाम।

विभिन्न रीति - रिवाज का क्या काम मेरे जीत की राह में ?
मेरा जीत तो निर्भर है, मेरे मेहनत के राह पे
मेरे लक्ष्य को भगवान के अर्चना से क्या काम ?
मेरे लक्ष्य, मेरे मेहनत को सलाम
दुआ मन्नत का क्या असर मेरे जीत के लिए ?
जब मेहनत हो बेअसर मेरे जीत के लिए।

भगवान की भक्ति का क्या मतलब
जो मेरे लक्ष्य के जीत पर निर्भर हो,
भक्ति तो वह रस है जो निस्वार्थ भावना से हो।
सफलता असफलता का ग्रह नक्षत्र से क्या काम ?
ग्रह नक्षत्र नहीं दिलाती ज़िंदगी में लक्ष्य प्राप्ति का आराम
अंधविश्वास की राह ठोकरों से भरी है,
मेहनत की राह आशवो से जुड़ी है।

हार - जीत को भक्ति, प्राथना से ना मिलाए,
सब अपने जगह पर सही है, उसको वैसे अपनाए ।

- विक्की सोनी

मोबाइल युग

एप्पल क्षत्रिय, सैमसंग ब्राह्मण यही पुरुष सूक्त है।
वन प्लस है वैश्य और शेष सब शूद्र हैं।।

व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टा यही चारों वेद है।
वेदांग सेव, शेयर, सब्सक्राइब, लाइक, फॉलो, कमेंट है।।

वीडियो-चैट है उपनिषद और यू-ट्यूब पुराण है।
फोटो, रिकार्डिंग, स्क्रीनशॉट योद्धा के हथियार है।।

डाटा, रैम है बाहुबल, हैंग-हैक विनाश है।
सब प्रश्नो के उत्तर सर्वज्ञ गूगल के पास है।।

पासवर्ड देना हॉट-स्पाट का ही महादान है।
बिना लॉक के जो रखें मोबाइल वो सच में महान है।।

मशहूर होना, रील बना के, यही सोच लोभ है।
छोड़ दिया जो ये सब वो पा गया मोक्ष है।।

मुट्ठी में है पूरी दुनिया, ये मोबाइल युग है।
घड़ी, कैलकुलेटर, कैमरा, कैलंडर सब इसमें युक्त है।।

- अलख निरंजन सिंह

प्रधान संपादक : अभिनंदन द्विवेदी | सहायक संपादक : शुभम कुमार, चित्रांश श्रीवास्तव, अलबेला | संपादक मंडल : विक्की कुमार, शिवम कुमार, कुश श्रीवास्तव, अंकित शर्मा | संपादकीय कार्यालय : पिठौरी, बनियापुर, सारण – 841301, बिहार | अपनी रचना हमें भेजे : rachnakosh.editor@gmail.com